

SĀH. D. 83, 2. PAÑKĀT. 133, 8. VEDĀNTAS. (Allah.) No. 112. KULL. zu M. 10, 5. P. 3, 1, 56, Sch. तस्येयमुपयुज्यते *eignet sich für ihn, ist für ihn bestimmt* BHĀG. P. 9, 23, 37. अनुपयुज्यमान *zu Nichts nützend* UTTARAR. 73, 16 (93, 1). उपयुक्त *zur Anwendung kommend, nöthig, erforderlich, am Platze seiend*: पद्यदस्तूपयुक्तं च तस्याः KATHĀS. 36, 65. 38, 71. 61, 11. 123, 31. RĀGA-TAR. 4, 525. प्रयाणेषु 588. प्रभुकार्योपयुक्तानु KATHĀS. 53, 140. 22, 38. PRAB. 110, 6. 9. सर्वार्थसंज्ञापयुक्ताः स्थानप्रयत्नाः P. 1, 1, 9, Sch. PAÑKĀR. 1, 11, 4. 2, 28. परार्थानुपयुक्तेन राज्येन KATHĀS. 72, 173. MADHUS. in Ind. St. 1, 16, 10. किमुपयुक्ता ऽयमेतावद्वर्तनं गृह्णात्ययानुपयुक्ता वा so v. a. *es verdienend* HIT. 98, 14. अनुपयुक्तमिवात्मानं समर्थये *unwürdig* ÇĀK. 97, 3. — Vgl. उपयोक्तव्य *(zu geniessen)* fgg. — caus. 1) *berühren, zusammenstossen mit* (acc.) BUĀG. P. 5, 16, 25. — 2) *anwenden* SUÇR. 1, 113, 10. — desid. s. उपयुज्यु.

— व्युप = उप 3) Spr. 3993, v. 1.

— समुप *geniessen, verzehren*: पर्णी समुपयुक्तवान् MBH. 3, 1538. — caus. dass.: बलिपञ्चमगमुङ्कृत्य बलिं समुपयोजयेत् (यः) MBH. 12, 5233.

— नि *gewöhnlich med.* 1) *anbinden, fesseln an* (loc.), bes. das Opferthier an den Pfosten: पाशे स बद्धो ऽङ्किते नि युञ्ज्यताम् AV. 2, 12, 2. VS. 6, 9. ÇĀÑKH. ÇR. 4, 14, 7. ÇĀT. BR. 3, 7, 3. 9, 1, 22. परिधौ पशुं नियुञ्जति ऀCV. ÇR. 9, 2, 4. पशुं बद्ध्वा पूये रशनायां वा नियुनक्ति GRĀH. 4, 8, 15. AIR. BR. 7, 16 (नियोजितं perf.). षट्कृतानि नियुज्यन्ते पशूनां मध्यमे ऽङ्कनि Cit. bei GAUDAP. zu SĀMĀHJAK. 2. MBH. 14, 2635. R. 1, 13, 31. रजकेनासौ (गर्दभः) शस्यतेत्रमध्ये नियुक्तः HIT. 81, 13. समुद्रो ऽयं नियुज्यताम् R. 5, 92, 17. धुरि *an die Deichsel spannen*: वरुहं किं तुदसि मां नियुज्य धुरि मा R. SCHL. 2, 36, 14. so v. a. *vorn an stellen* 5, 2, 3. so v. a. *die schwerste Arbeit aufbürden* Spr. 280, v. 1. *verbinden, zusammenfügen*: कपेतो (eine best. Stellung der Hände) भीतौ u. s. w. नियुज्यते (vgl. मुष्टिं, अञ्जलिं बन्धु) Cit. bei ÇĀÑK. zu ÇĀK. 78, 9. — 2) *an Jmd binden* so v. a. *von Jmd abhängig machen*: तं गृणते नि युंघि AV. 8, 3, 11 (v. 1. RV.). बृहस्पतिश्चा नियुनक्तु मक्ष्मं ऀCV. GRĀH. 1, 21, 7. आत्मन्येव श्रियम् ÇĀT. BR. 5, 5, 3, 6. भूयं नियुक्तस्तस्यो हि मद्नेन *an sie gekettet* R. 5, 20, 6. — 3) *den Blick, den Geist, die Gedanken richten auf* (loc. dat.): नियुक्ता यत्र वा दृष्टिः MBH. 1, 7694. तस्य विनाशाय शीघ्रं राजा मनो नियुङ्क्ते KULL. zu M. 7, 12. आत्मा सुखे नियोक्तव्यः Spr. 2723. *stellen an* (loc.): गुरुस्थाने न मां वीरं नियोक्तुं त्वमर्हसि MBH. 3, 1858. *bringen auf*: कथमिमं पितृपितामहे मार्गं नियोक्तुं मरुमुत्सहे 1, 6156. *Jmd anhalten* —, *anweisen zu, anstellen bei, zu, betrauen* —, *beauftragen mit*: चातुर्वर्ण्यं च लोके ऽस्मिन्स्वे स्वे धर्मे नियोह्यति R. 1, 1, 92. MBH. 5, 1561. ÇĀK. 9, 13. क्तिते Spr. 2174. यं तु कर्मणि यस्मिन्स न्ययुङ्क्त प्रथमं प्रभुः M. 1, 28. आकारकर्मात्ते 7, 62. कार्यदर्शने 8, 9 (act.). कृत्ये MBH. 2, 1228. कार्यं गुरुणि KUMĀRAS. 3, 13. हेमतुरंगरत्नपो RAGH. 3, 38. वाणिज्यव्यवहारेषु KATHĀS. 43, 70. लेखस्य लेखने 267, 71, 82. BHĀG. P. 10, 73, 24. HIT. 41, 22. 62, 20. 90, 18. प्राणेषु च धनेषु च Spr. 2360. नियुक्तेयं वनवासे R. 2, 37, 16. कार्येषु M. 9, 231. MBH. 4, 131. अश्वेषु 317. R. 2, 66, 7 (68, 17 GORR.). 4, 9, 7. P. 6, 2, 75. ÇĀK. 13, 23. RAGH. 5, 29. 6, 26. 31. द्वारे PAÑKĀR. 1, 7, 76. MĀLAV. 11. Spr. 1583. 2372. 3472 (Conj.). KATHĀS. 14, 35. P. 4, 4, 70, Sch. BHĀG. P. 5, 21, 16. 8, 14, 1. HIT. 91, 11, v. 1. 97, 17. BHĀṬṬ. 3, 5. स पुत्रमेकं राज्याय पालयेति नियुज्य R. 1, 55, 11 (स पुत्रमेकं राज्याय नियुज्य परिपालने GORR. 56, 11). इद्वितरमतिथिसत्का-

राय नियुज्य ÇĀK. 7, 15. शुश्रूषाये मम KATHĀS. 1, 40. पित्रा नियुक्ता वनवासाय R. 4, 4, 5. BHĀG. P. 5, 21, 17. राज्ञो संमानार्थं च पौराणो च तेन न्ययुज्यत KATHĀS. 14, 34. सो ऽपि नियुक्तवान् । गूढमन्त्रपुरे तत्र निशि नारीमन्वित्तुम् 3, 70, 34, 68. राज्यभारनियुक्त *betraut* —, *beauftragt mit* R. 1, 27, 18. 5, 70, 9. Spr. 884. वृषभ एव राज्ञा पिङ्गलकेनारण्यरत्नार्थं सेनापतिर्नियुक्तः *als Heerführer eingesetzt* HIT. 38, 17. एतस्यात्मज्ञो — वर्षपती नियुज्य BHĀG. P. 5, 20, 31. प्रकृतिस्त्वो नियोह्यति *anhalten, dazu treiben* BHAG. 18, 59. MBH. 3, 2758. 5, 6084 (act.). HARIV. 11161 (act.). R. 1, 54, 16 (53, 16 GORR.). R. GORR. 2, 20, 12. 5, 78, 23. Spr. 4014. नियुज्यताम् HIT. 88, 17. नियुज्यमान Spr. 3544. MBH. 1, 6943. नियोक्तव्य 4862. 5, 6084. M. 9, 64. JĀGĀ. 2, 3. नियुक्त *angehalten, angewiesen, angestellt, beauftragt, aufgefordert* M. 3, 173. 5, 27. 35. 9, 58. fgg. 63. 144. 167. R. 1, 14, 35 (31 GORR.). 2, 54, 15 (17 GORR.). 90, 12. 101, 7. 105, 36. fg. (114, 24. fg. GORR.). 107, 6. 7. RAGH. 16, 38. KATHĀS. 14, 54. 18, 276. 20, 88. 24, 222. 28, 93. BHĀG. P. 2, 6, 31. 5, 10, 4. BRAHMA-P. in LA. (III) 57, 16. अनियुक्त M. 9, 143. 147. JĀGĀ. 3, 288. HARIV. 7338. R. GORR. 2, 62, 2. 95, 16. KATHĀS. 60, 112. नियुक्त *m. ein Angestellter, Beamter* Spr. 1009. — 4) *Jmd zur Rechenschaft ziehen*: न स राज्ञा नियोक्तव्यो न नितेतुश्च बन्धुभिः M. 8, 186. — 5) *Jmd* (loc.) *Etwas* (acc.) *aufladen, auftragen*: गुरुकार्याणि सर्वाणि नियुज्य कुशिकात्मज्ञे R. 1, 24, 22. भवद्विष्यन्नियुज्यते BHĀG. P. 10, 41, 48. — 6) *verwenden*: गाथाम् PĀR. GRĀH. 1, 15. GOBH. 1, 4, 34. वासः 3, 1, 9. — 7) *नियुक्त bestimmt, vorgeschrieben*: पाठीनरेक्तित्वाद्यौ नियुक्ता कृत्यकव्ययोः M. 5, 16. नियुक्तम् *adv. durchaus, auf jeden Fall, nothwendig* RV. PĀT. 3, 12. 11, 23. P. 4, 4, 66. — 8) *कृतत्रेतानियुक्तानि* HARIV. 523 *fehlerhaft für कृतत्रेतादियुक्तानि*, wie die neuere Ausg. liest. — Vgl. नियुक्ति, नियोक्तार fgg. — caus. 1) *anspannen*: वृषभौ धुरि नियोज्य HIT. 46, 13. *anbinden, befestigen*: स्वकाण्डे पाशं नियोज्य PAÑKĀT. 133, 4. रत्नं चामीकरनियोजितम् *gefasst in* Spr. 5020. — 2) *hinstellen, aufstellen*: पाशास्तत्र नियोजिताः HIT. 21, 10. शनैश्चो ग्रहाणां च मध्ये पित्रा नियोजिताः MĀRK. P. 78, 33. *legen* —, *auftragen auf* Verz. d. Oxf. H. 103, b, 8. *hinbringen zu*: केशेष्वाकृत्य तौ रण्डो पावण्डेषु नियोज्य PRAB. 41, 17. *richten auf*: ब्रह्मनियोजितात्मन् KUMĀRAS. 3, 15. *Jmd versetzen* —, *bringen in, zu*: दास्ये MBH. 1, 1237. कृच्छ्रे R. GORR. 2, 10, 12. दुःखे 78, 3. दुःखमार्गे Spr. 253. संदेहे PAÑKĀT. 8, 21. *anhalten* —, *zwingen zu*: क्तिनेषु M. 9, 324. धर्मे MBH. 1, 6191. विनये KĀM. NĪTIS. 1, 64. कर्मणि घोरे BHAG. 3, 1. अकृत्येषु Spr. 2689. *an ein Amt, eine Beschäftigung stellen, in eine Würde einsetzen*: स्वपदे KATHĀS. 22, 58. अस्मिन्विषये PRAB. 37, 8. काञ्चिन्मुष्याश्च मुष्येषु (sc. कार्येषु) मध्यमेषु च मध्यमाः । तद्यन्याश्च तद्यन्येषु भृत्यास्तात् नियोजिताः ॥ R. GORR. 2, 109, 20. यौवराज्ये R. SCHL. 2, 26, 23. मन्त्रित्वे KATHĀS. 6, 70. 23, 276. MĀRK. P. 78, 31. SARVADARÇANAS. 86, 9. PAÑKĀT. 24, 5. कुल्यार्थे HARIV. 2098. तव कौतुकप्रतिकर्मणि KATHĀS. 43, 295. ग्राम्यधर्मेषु PAÑKĀT. 31, 6 (27, 15 ed. orig.). अर्थस्य संग्रहे व्यये च M. 9, 11. रत्नानां चान्वेक्षणो । दक्षिणानां च वै दनि MBH. 2, 1292. अस्तिपङ्क्तिरनेकशस्त्रया गुणकृत्ये धनुषो नियोजिता KUMĀRAS. 4, 15. R. 2, 36, 4. प्राज्ञे, मूर्खे नियोज्यमाने Spr. 1887. fg. तद्वलानि सारसादयः सेनापतयो नियोज्यताम् HIT. 102, 2. *Jmd anweisen* —, *antreiben zu, auffordern* (dat.): वनवासाय R. GORR. 2, 17, 20. रावणोच्छ्रित्ये KATHĀS. 15, 82. खर्गुरानयनं प्रति 61, 32. अतप्यार्थम् M. 9, 68. R. 1, 38, 10. दिव्यार्थे PAÑKĀT. 97, 1. अरुमेव तया तत्र